© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

प्रोमिला, **Net Qualified 2016**

विषय संकेत :– भारतीय समाज विज्ञान, विज्ञान के मॉडल, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद, भारतीय अर्थशास्त्र, वैश्विक कल्याण, भारतीय चित्त एवं मानस

आज आवश्यकता है भारतीय वाङ्गमय में स्थापित उच्चादर्शों, मूल्यों को समकालीन समस्याओं एवं चुनौतियों के संदर्भ में रखकर देखा जाए एवं वैश्विक दृष्टि सम्पन्न मानवीय मूल्यों एवं तकनीकी उपलब्धियों को आत्मसात करते हुए उन आदर्शों मूल्यों को स्थापित किया जाये जो भौतिकवादी आदर्शों से उत्पन्न अन्तर्विरोधों एवं उपभोक्ता केन्द्रित बाजारवादी व्यवस्था के चंगुल से सम्पूर्ण मानवता को बचा सके। यह आलेख भारतीय समाज विज्ञानों के समक्ष खड़ी इन्हीं चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करता है।

ISSN : 2348-5612 © URR

विश्व में औद्योगिक क्रांति का प्रारम्भ पूँजीवाद प्रणाली के साथ हुआ किंतु कालान्तर में यह शोषण का दर्शन बनकर रह गया और 1929–32 की महामंदी ने तो इसे नकारा ही साबित कर दिया। इसके विपरीत मार्क्स के दर्शन पर आधारित साम्यवादी प्रणाली ने प्रेरणा और पहल की समस्यायं उत्पन्न कर दी। यह प्रणाली भी सोवियत यूनियन और इसके सहयोगी राज्यों के पतन के साथ शीघ्र ही समाप्त प्रायः हो गयी। आज का चीन साम्यवाद की बजाय बाजार अर्थव्यस्था के काफी कुछ निकट आ गया है। अतः आज तो विभिन्न रूपों एवं प्रकारों में बाजारवाद ही चल रहा है। किन्तु हर क्षण वह अनेक कठिनाइयों व समस्याओं से ग्रस्त भी हो जा रहा है।

2008 में अमेरिका से प्रारम्भ हुई वैश्विक मंदी और वैश्विक वित्तीय संकट अब समूचे विश्व में फैल गया है। अमेरिका और यूरोप के अधिकांश देश कर्ज में डूबे हैं, बैंक दिवालिया हो गये है, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। स्पेन, पुर्तगाल, इटली और ग्रीस जैसे देशों ने तो समूची योरोपीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिये ही संकट पैदा कर दिया है। इस प्रकार इस वैश्विक आर्थिक संकट ने स्वतंत्र एवं अनियंत्रित बाजारों वाले उन्मुक्त पूँजीवादी दर्शन के खोखलेपन को जग जाहिर कर दिया है। अभी हाल ही में अमेरिका में Occupy Wall Street (OWS) आंदोलन प्रारम्भ हुआ है जिसका जन्म आय की असमानताओं में से हुआ है। अमेरिका में रह रहे दुनिया की 1 प्रतिशत जनसंख्या का 40 प्रतिशत परिसम्पति और 20 प्रतिशत आय पर कब्जा है। इसलिये यहाँ आन्दोलनकारी कारपोरेट लालच और असमानता के विरोध में आन्दोलन कर रहें है। अमेरिका की वर्तमान राजनैतिक– आर्थिक प्रणाली का वर्णन करते हुए जोसेफ स्टिगलिट्स कहते हैं कि यह 1 प्रतिशत की 1 प्रतिशत द्वारा 1 प्रतिशत के लिए चलाई जा रही व्यवस्था है। इस प्रकार यह अन्याय और असमानता के सिद्वान्त पर टिकी और चल रही प्रणाली है। 'आर्थिक संवृद्धि होने पर सामान्य व्यक्ति तक इसका लाभ स्वतः पहुँच जायेगा' वाली Trickle down Theory पूर्णतः असफल सिद्व हो गई है, परिणामस्वरूप विश्वभर में विषमता लगातार बढ़ रही है। चीन, भारत, रूस और ब्राजील जैसे देशों की अर्थव्यवस्थायें तुलनात्मक रूप से मजबूत मानी जाती है। पर एक ध्रुवीय वैश्विक परिस्थिति, ईंधन व कच्चे माल के लगातार बढ़ते दामों के कारण यहाँ भी संकट व अस्थिरता का महौल बन रहा है।

विकास के वर्तमान मॉडल ने मनुष्यों के लिए ही नहीं बल्कि समूचे प्राणिमात्र के लिए ही अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण एवं मुद्रा प्रदूषण के कारण हमारे चारों ओर प्रदूषित वातावरण का घेरा गहरा होता जा रहा हैं। पर्यावरण हस, प्रदूषण स्तर में वृद्धि, वैश्विक तपन व जलवायु परिवर्तन जैसी घटनाओं के कारण समूची पृथ्वी का अस्तित्व की संकट में पड़ता जा रहा है। नैतिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट तथा पारिवारिक एवं सामुदायिक जीवन के हस ने स्थिति को और अधिक खराब बना दिया है। अकेलापन–सूनापन, बलात्कार–व्यभिचार, नशाखोरी, स्वच्छन्द यौनाचार, नग्नता का नंगा नाच, तनाव व अवसाद से ग्रस्त जीवन तथा सामाजिक संघर्षो की बढ़ती हुई प्रवृत्तियाँ एवं घटनायें समूचे सामाजिक ताने–बाने को ही ध्वस्त करती जा रही हैं। इतना ही नहीं, इसके परिणामस्वरूप भाव व भावनायें, मानवीय सम्बन्ध और संवेदनायें भी प्रदूषित होती जा रही है। वर्तमान विकास का मॉडल शोषणकारी हैं, इसने हर स्तर पर एक इकाई द्वारा दूसरी इकाई के शोषण की प्रक्रिया को जन्म दिया है। भारत सहित दुनियाँ के अधिकांश देशों में भूख, बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी, विषमता का एक दुष्चक्र बना गया है। भारत में तो योजना आयोग ने प्रति व्यक्ति दैनिक उपभोग शहरी क्षेत्र में 28 रूपये और ग्रामीण क्षेत्र में 22 रूपये गरीबी रेखा का आधार बताकर गरीबों के साथ क्रूर मजाक ही कर डाला है। समूचा विश्व ही बेतुकी अममानता की और बढ़ता जा रहा है। संचार लगभग आधी आबादी (अर्थात् 3 बिलियन से अधिक लोग) 2 डालर प्रतिदिन से कम पर गुजारा करती है। विश्व की 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या उन देशों में रहती है जहाँ आय की असमानतायें तेजी से बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार, आर्थिक अपराध, घूसखोरी और कालेधन में लगातार हो रही वृद्धि ने आम व्यक्ति के दुःख दर्द को और अधिक बढ़ा दिया है। उपभोग वृद्धि को विकास का इंजिन बताकर विज्ञापन प्रेरित भोगवादी जीवन शैली को बढ़ावा दिया जा रहा है। विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओं के माध्यम से विश्व के छोटे व गरीब देशों व समाजों को आर्थिक साम्राज्यवाद की गिरफ्त में फंसाया जा रहा है ऊर्जा व जल संकट भी दिनोंदिन गहराता जा रहा है।

इसके अलावा, समूचे संसार में आतंकवाद, उग्रवाद, अलगावाद, हिंसाचार, मतांतरण, कठपुल्लापन, भोगवाद एवं अनाचरण की प्रवृत्तियों को वैचारिक आधारभूमि प्रदान करने वाली संकल्पनायें, अवधारनायें, विश्लेषण–विवेचन एवं व्याख्यायें बड़ी मात्रा में प्रस्तुत की जा रही है। आज के समाज वैज्ञानिकों को वैचारिक आधार पर इनका उत्तर तलाशने की आवश्यकता है। समूचा विश्व अपराधों की गिरफ्त में जकड़ा जा रहा है और तथाकथित वैज्ञानिक प्रगति, शिक्षा और आर्थिक विकास भी इसका समाधान प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं। इस दृष्टि से हाल ही में प्रकाशित कुछ आंकड़ें चौकाने वाले है। इनके अनुसार जेलों की संख्या अमेरिका में 4575, भारत में 1393 और ब्राजील में 16.8 प्रतिशत है। एक लाख आबादी पर प्रतिवर्ष हत्या की दर अमेरिका में 5, भारत में 3.4 और ब्राजील में 25 है। अमेरिका, यूरोप एवं अरब देशों के हाल ही के घटनाक्रम अस्थिरता एवं अराजकता की ओर अग्रेतर हो रहे विश्व के पर्याप्त संकेत है। इसके साथ ही, वैश्विक स्तर पर बनते बिगड़ते राजनैतिक आर्थिक ध्रुवीकरण, विभिन्न देशों के बीच सीमा, जल एवं प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा जमाने की प्रवृत्ति में से उपज रहे विवाद एवं संघर्ष, विभिन्न आतंकवादी गुटों के बीज़ गठजोड़ एवं विभिन्न देशों द्वारा इनका प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष समर्थन–संरक्षण, विभिन्न देशों में कमजोर होती कानून व्यवस्था में से उपज रही अराजकता आदि भी घोर चिन्ता के कारण बने हुए है। अपने ही विचार, वाद एवं पथ को सही मानने और बाकी को गलत मानकर येन–केन प्रकारेण अपने जैसा बनाने की मनोवृत्ति में से आतंकवाद जन्म लेता है। विश्व के समृद्व एवं शक्तिशाली देश एवं उनकी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति भी इसे बढ़ावा दे रही है।

वैश्विक परिदृश्य के साथ साथ हमें भारत के परिदृश्य को भी ठीक से समझना–परखना होगा। भारत का विस्तृत –विशाल भू भाग और विश्व के मानचित्र में उसकी भू राजनैतिक–रणनीतिक दृष्टि से अवस्थिति, विशाल कृषि योग्य भूमि, छः ऋतुएँ, समृद्ध जैव संपदा, पर्याप्त